रासायनिक खाद मुक्त कृषि को बढ़ावा देने की आवश्यकता : हरिभाऊ बागड़े

- किसानों को खेती के साथ पशुपालन को बढ़ावा देकर समन्वित कृषि प्रणाली को अपनाने की बात कही
- प्राकृतिक खेती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह को राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने संबोधित किया।

बीकानेर,(कासं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में गुरूवार को प्राकृतिक खेती पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ मुख्य अतिथि राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े, विशिष्ट अतिथि केन्द्रीय कानून एवं न्याय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरूण कुमार ने की।

कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित विद्या मंडप सभागार में संगोष्ठी के शुभारंभ अवसर पर श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ मनोज दीक्षित, राजुवास के पूर्व कुलपति डॉ ए. के. गहलोत, जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि, एसपी तेजस्विनी गौतम, कृषि विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार देवाराम सैनी, वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री सहित विवि के सभी डीन, डायरेक्टर्स समेत अन्य कार्मिक, किसान, कृषक महिलाएं और स्टूडेंट्स मौजूद थे। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर द्वारा विकसित फसल अवशेष प्रबंधन मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' का लोकार्पण भी किया। कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा पुस्तिका 'फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' का विमोचन किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण और अच्छे स्वास्थ्य के लिए रासायनिक खाद मुक्त कृषि को बढ़ावा देने की सख्त आवश्यकता है। रासायनिक खाद के अंधाधुंध प्रयोग से जमीन के जीवाणु, असंख्य पक्षी विलुप्त हो चुके हैं और कैंसर रोगी बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसी तरह अगर फसलों में रासायनिक खाद का इस्तेमाल होता रहा तो एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 5 में से एक व्यक्ति को कैंसर होगा। यानि करीब 28 करोड़ लोग कैंसर से ग्रसित होंगे। ऐसे स्थिति में बड़ी संख्या में अस्पताल और डॉक्टर कहां से लायेंगे। उन्होने किसानों को खेती के साथ पशुपालन को बढ़ावा देकर समन्वित कृषि प्रणाली को अपनाने की बात कही। साथ ही बारिश के पानी को गांव की सीमा के अंदर ही रोकने और सहेजने की आवश्यकता बताई।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन को लेकर साधुवाद देते हुए कहा कि इस आयोजन से किसानों में जागरूकता आयेगी। केन्द्रीय कानून एवं न्याय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि भारत सरकार खेती को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। मेघवाल ने प्रसिद्ध लोक गायिका अल्ला जिलाई बाई द्वारा गाए गीत खोखा म्हाने लागे चौखा..., खेजड़लियां रा खजूर..., फोगले रो करां म्हे रायतो..., जिमां रोटी चूर... गाकर प्राकृतिक खेती और श्रीअन्न को बढ़ावा देने और रोटी चूर के जीमने की बात कही। साथ ही बताया कि 9 दिसम्बर 1925 को फिरोजपुर में नहर का शिलान्यास हुआ था।

इसके 100 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों के तहत प्राकृतिक खेती में अच्छा कार्य करने वाले 100 किसानों को वर्ष 2025 में पुरस्कृत किया जायेगा। मेघवाल ने स्वामी केशवानंद के शिक्षा में योगदान को भी याद किया।

केन्द्रीय कृषि व किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि भारत सरकार प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जा रही है। अगर किसी किसान के पास 5 एकड़ भूमि है और उसमें से एक एकड़ भूमि पर वह प्राकृतिक खेती करता है तो उसे 20 हजार रूपए का इनेंशियटिव दिया जायेगा। कृषि वैज्ञानिकों ने बहुत अच्छा कार्य किया लेकिन अब खेतों में रासायनिक खाद के अंधाधुंध प्रयोग से भूमि बंजर हो रही है। जिस तरह एक नशा करने वाला बिना नशे के नहीं चलता, उसी प्रकार धरती को भी रासायनिक खाद का एडिक्ट बना दिया गया है। अगर मानव को बचाना है तो प्राकृतिक खेती की ओर जाना होगा।

इससे पूर्व कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कार्यक्रम में स्वागत भाषण देते हुए कहा कि प्राकृतिक खेती एक ऐसा तरीका है जिसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है और पर्यावरण के अनुकूल टिकाऊ कृषि को प्रोत्साहन दिया जाता है।

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाना जरूरी : राज्यपाल बागडे

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रारंभ

बीकानेर, (निसं)। राज्यपाल हरि भाऊ बागडे ने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। मिट्टी के मित्र किटाणु और सूक्ष्म जीवों की संख्या में नगण्य रह गई है। इन उर्वरकों के कारण आज केंसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राज्यपाल बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि आज इतिहास की पुनरावृति की जरूरत है और जरूरी है की एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी। राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए है। उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश की गो आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया।

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरुआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्योग, साहित्य, कृषि, पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअन्न (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है।

केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। उन्होंने कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित कर रहा है। मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वप्न है कि देश का किसान खुशहाल हो। मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार कृषि और किसानों की दशा और दिशा सुधारने को कृत संकल्प है। उन्होंने केंद्र सरकार की कृषक कल्याण से जुड़ी योजनाओं और कृषि हित से जुड़े निर्णयों के बारे में बताया। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने स्वागत उद्बोधन दिया। उन्होंने विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया। साथ ही संगोष्ठी के सत्रों एवं विषयों की जानकारी दी। इस दौरान राज्यपाल बागडे ने फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर पुस्तक का विमोचन किया। बागडे ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर का लोकार्पण किया और विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। संगोष्ठी समन्वयक और अधिष्ठाता डॉ. पी.के. यादव ने आभार जताया। कार्यक्रम में श्रीडूंगरगढ़ विधायक तारचंद सारस्वत, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, जिला कलेक्टर श्रीमती नम्रता वृष्णि, पुलिस अधीक्षक श्रीमती तेजस्विनी गौतम, राजुवास के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी सहित किसान, कृषि वैज्ञानिक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

दैनिक भास्कर
बीकानेर 30-08-2024

कृषि विश्वविद्यालय में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

रसायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध प्रयोग से बढ़ रहे असाध्य रोग, प्राकृतिक खेती अपनाना ही विकल्पः राज्यपाल

सिटी रिपोर्टर | बीकानेर

राज्यपाल हरि भाऊ बागडे ने कहा कि कम लागत में अधिक उपज और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। मिट्टी के मित्र किटाणु और सूक्ष्म जीवों की संख्या में नगण्य रह गई है। इन उर्वरकों के कारण आज कैंसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राज्यपाल बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में ''प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम'' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। जरूरी है कि एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी। केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया। साथ ही संगोष्ठी के सत्रों एवं विषयों की जानकारी दी। इस दौरान राज्यपाल बागडे ने ''फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर'' पुस्तक का विमोचन किया। कार्यक्रम में श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि, पुलिस अधीक्षक तेजस्विनी गौतम, राजूवास के पूर्व कुलपति प्रो.एके गहलोत, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी सहित किसान, कृषि वैज्ञानिक और विद्यार्थी शामिल हुए।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले राज्यपाल हरिभाऊ बागडे

प्राकृतिक खेती की ओर लौटना जरूरी, क्योंकि नष्ट हो रही भूमि की उर्वरा शक्ति

मंच पर पुस्तक का विमोचन करने के बाद संबोधन देते राज्यपाल।

बीकानेर @ पत्रिका. एक दौर था जब 40 करोड़ लोगों का पेट भरने को हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। यह कहना है राज्यपाल हरिभाऊ बागडे का। वे स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विवि में प्राकृतिक खेती पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। कैंसर जैसे असाध्य रोग से पीड़ितों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

पहले ऐसा नहीं था

राज्यपाल ने कहा कि 50 साल पहले तक रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं होता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। दुष्परिणाम सामने हैं। जरूरी है कि एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर लौटें। उन्होंने कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में भी बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है।

... म्हाने प्यारों लागे सा

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने एक दोहा खोखा म्हाने लागे चौखा खेजडळीयां रा खजूर, फोगले रो करा म्हें रायतों जीमा रोटी चूर... म्हाने प्यारों लागे सा गाकर सुनाया। उन्होंने श्रीअन्न (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने और राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान की जरूरत बताई। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है।

सहायक सिद्ध मशीन

राज्यपाल ने कृषि विवि में विकसित फसल अवशेष प्रबंधन मशीन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर का लोकार्पण भी किया। इस मशीन को भारत सरकार और यूके से पेटेंट भी मिल चुका है। यह मशीन उत्तर भारत में पराली जलाने की समस्या से निजात दिलाने में सहायक सिद्ध होगी। इस दौरान कुलपति डॉ. अरुण कुमार, श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, एमजीएसयू के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, कलक्टर नम्रता वृष्णि, एसपी तेजस्वनी गौतम, प्रो. एके गहलोत, कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी आदि मौजूद रहे।

आज आएंगे गुजरात के राज्यपाल

संगोष्ठी का समापन शुक्रवार को होगा। संगोष्ठी संयोजक डॉ. पीके यादव ने बताया कि समापन समारोह के मुख्य अतिथि गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत, विशिष्ट अतिथि देवीसिंह भाटी और गुजरात प्राकृतिक खेती विवि के कुलपति डॉ. सीके टिम्बड़िया होंगे। समापन समारोह में कृषि विवि बीकानेर व गुजरात के प्राकृतिक खेती विज्ञान विवि के मध्य एमओयू भी होगा।

दैनिक राजस्थानी चिराग
Rajasthanichirag1996@gmail.com

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाना जरूरी : राज्यपाल बागडे

>> स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रारंभ

राजस्थानी चिराग रिपोर्टर

बीकानेर। राज्यपाल हरि भाऊ बागडे ने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। मिट्टी के मित्र किटाणु और सूक्ष्म जीवों की संख्या में नगण्य रह गई है। इन उर्वरकों के कारण आज केंसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

राज्यपाल बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि आज इतिहास की पुनरावृत्ति की जरूरत है और जरूरी है की एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी।

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरुआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर 'बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष' कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्योग, साहित्य, कृषि, पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअन्न (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। उन्होंने कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित कर रहा है। मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वप्न है कि देश का किसान खुशहाल हो। मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार कृषि और किसानों की दशा और दिशा सुधारने को कृत संकल्प है। उन्होंने केंद्र सरकार की कृषक कल्याण से जुड़ी योजनाओं और कृषि हित से जुड़े निर्णयों के बारे में बताया।

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने स्वागत उद्बोधन दिया। उन्होंने विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया। साथ ही संगोष्ठी के सत्रों एवं विषयों की जानकारी दी।

इस दौरान राज्यपाल बागडे ने 'फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर' पुस्तक का विमोचन किया। बागडे ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर का लोकार्पण किया और विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। संगोष्ठी समन्वयक और अधिष्ठाता डॉ. पी.के. यादव ने आभार जताया। कार्यक्रम में श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, जिला कलेक्टर श्रीमती नम्रता वृष्णि, पुलिस अधीक्षक श्रीमती तेजस्विनी गौतम, राजूवास के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी सहित किसान, कृषि वैज्ञानिक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी : राज्यपाल

राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश की गो आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया।

स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाना जरूरी: राज्यपाल बागड़े

कृषि विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

नवज्योति। न्यूज सर्विस

बीकानेर। राज्यपाल हरि भाऊ बागड़े ने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। बागड़े गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। जरूरी है की एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। राज्यपाल ने प्रदेश की गो आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी।

मोटे अनाज को प्रोत्साहित करने की जरूरत: मेघवाल

केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने मोटे अनाज को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है।

केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित कर रहा है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने स्वागत उद्बोधन दिया। इस दौरान राज्यपाल बागड़े ने फसल अवशेष प्रबंधन के लिए स्टेबल चॉपर सह स्प्रेडर पुस्तक का विमोचन किया। बागड़े ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित स्टेबल चॉपर सह स्प्रेडर का लोकार्पण किया और विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। कार्यक्रम में श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, कलक्टर नम्रता वृष्णि, एसपी तेजस्विनी गौतम, राजूवास के पूर्व कुलपति प्रो. एके गहलोत, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी सहित किसान, कृषि वैज्ञानिक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

आज होगा एमओयू

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वव द्यालय में प्राकृतिक खेती पर चल रही दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन शुक्रवार को होगा। समापन समारोह में स्वामी केशव ानंद राजस्थान कृषि विश्वव द्यालय बीकानेर और गुजरात के प्राकृतिक खेती विज्ञान विश्वव द्यालय के मध्य एमओयू भी होगा। साथ ही पोस्टर प्रस्तुति में उत्कृष्ट प्रतिभ ागियों को प्रमाण पत्र का वितरण किया जाएगा। संगोष्ठी संयोजक डॉ पीके यादव ने बताया समापन समारोह के मुख्य अतिथि गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत और विशिष्ठ अतिथि पूर्व कैबिनेट मंत्री देवी सिंह भाटी और गुजरात प्राकृतिक खेती विश्वव द्यालय के कुलपति डॉ सीके टिम्ब डिया होंगे। संगोष्ठी में पहले दिन तकनीकी सत्र का आयोजन कुलपति डॉ. अरुण कुमार की अध्यक्षता और अनुस ंधान निदेशक डॉ. विजय प्रकाश की सह अध्यक्षता में आयो जित किया गया। वहीं, संगोष्ठी के दूसरे दो तकनीकी सत्रों का आयोजन किया जाएगा।

पर्यावरण शुद्धता के लिए प्राकृतिक खेती अपनाना जरूरी : राज्यपाल

कामयाब कलम रिपोर्टर।

बीकानेर। राज्यपाल हरि भाऊ बागडे ने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। मिट्टी के मित्र किटाणु और सूक्ष्म जीवों की संख्या में नगण्य रह गई है। इन उर्वरकों के कारण आज केंसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। वे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि आज इतिहास की पुनरावृत्ति की जरूरत है और जरूरी है की एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी।

आज भरे हुए है हमारे अन्न भंडार

राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश की गो आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया।

हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा-अर्जुनराम मेघवाल

संगोष्ठी में कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। श्री मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरुआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर 'बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष' कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्योग, साहित्य, कृषि, पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअन्न को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है।

रसायनिक उर्वरकों से खत्म हो रही खेतों में उर्वरा शक्ति-सीआर चौधरी

संगोष्ठी में केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। उन्होंने कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित कर रहा है। मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वप्न है कि देश का किसान खुशहाल हो। श्री मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार कृषि और किसानों की दशा और दिशा सुधारने को कृत संकल्प है। उन्होंने केंद्र सरकार की कृषक कल्याण से जुड़ी योजनाओं और कृषि हित से जुड़े निर्णयों के बारे में बताया।

यह भी रहे मौजूद

संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार, अधिष्ठाता डॉ. पी.के. यादव, श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, जिला कलेक्टर श्रीमती नम्रता वृष्णि, पुलिस अधीक्षक श्रीमती तेजस्विनी गौतम, राजूवास के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी सहित किसान, कृषि वैज्ञानिक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

हुक्मनामा समाचार

hukmnama@gmail.com

राज्यपाल ने कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर कहा-

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाना जरूरी

बीकानेर,(हुक्मनामा समाचार)। राज्यपाल हरि भाऊ बागडे ने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। मिट्टी के मित्र किटाणु और सूक्ष्म जीवों की संख्या में नगण्य रह गई है। इन उर्वरकों के कारण आज कैंसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राज्यपाल बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में %प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम% विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि आज इतिहास की पुनरावृत्ति की जरूरत है और जरूरी है की एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी। राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश की गो आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया। केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। श्री मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरुआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर %बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष% कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्योग, साहित्य, कृषि, पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में उल्लखेनीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअन्न (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। उन्होंने कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित कर रहा है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले राज्यपाल हरिभाऊ बागडे

प्राकृतिक खेती की ओर लौटना जरूरी, क्योंकि नष्ट हो रही भूमि की उर्वरा शक्ति

मंच पर पुस्तक का विमोचन करने के बाद संबोधन देते राज्यपाल।

बीकानेर @ पत्रिका. एक दौर था जब 40 करोड़ लोगों का पेट भरने को हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। यह कहना है राज्यपाल हरिभाऊ बागडे का। वे स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विवि में प्राकृतिक खेती पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। कैंसर जैसे असाध्य रोग से पीड़ितों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

पहले ऐसा नहीं था

राज्यपाल ने कहा कि 50 साल पहले तक रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं होता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। दुष्परिणाम सामने हैं। जरूरी है कि एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर लौटें। उन्होंने कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में भी बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है।

... म्हाने प्यारों लागे सा

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने एक दोहा खोखा म्हाने लागे चौखा खेजडळीयां रा खजूर, फोगले रो करा म्हें रायतों जीमा रोटी चूर... म्हाने प्यारों लागे सा गाकर सुनाया। उन्होंने श्रीअन्न (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने और राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान की जरूरत बताई। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है।

सहायक सिद्ध मशीन

राज्यपाल ने कृषि विवि में विकसित फसल अवशेष प्रबंधन मशीन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर का लोकार्पण भी किया। इस मशीन को भारत सरकार और यूके से पेटेंट भी मिल चुका है। यह मशीन उत्तर भारत में पराली जलाने की समस्या से निजात दिलाने में सहायक सिद्ध होगी। इस दौरान कुलपति डॉ. अरुण कुमार, श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, एमजीएसयू के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, कलक्टर नम्रता वृष्णि, एसपी तेजस्वनी गौतम, प्रो. एके गहलोत, कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी आदि मौजूद रहे।

आज आएंगे गुजरात के राज्यपाल

संगोष्ठी का समापन शुक्रवार को होगा। संगोष्ठी संयोजक डॉ. पीके यादव ने बताया कि समापन समारोह के मुख्य अतिथि गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत, विशिष्ट अतिथि देवीसिंह भाटी और गुजरात प्राकृतिक खेती विवि के कुलपति डॉ. सीके टिम्बड़िया होंगे। समापन समारोह में कृषि विवि बीकानेर व गुजरात के प्राकृतिक खेती विज्ञान विवि के मध्य एमओयू भी होगा।

दैनिक भास्कर

बीकानेर 30-08-2024

कृषि विश्वविद्यालय में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

रसायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध प्रयोग से बढ़ रहे असाध्य रोग, प्राकृतिक खेती अपनाना ही विकल्पः राज्यपाल

सिटी रिपोर्टर | बीकानेर

राज्यपाल हरि भाऊ बागडे ने कहा कि कम लागत में अधिक उपज और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। मिट्टी के मित्र किटाणु और सूक्ष्म जीवों की संख्या में नगण्य रह गई है। इन उर्वरकों के कारण आज कैंसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राज्यपाल बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में ''प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम'' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। जरूरी है कि एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी। केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया। साथ ही संगोष्ठी के सत्रों एवं विषयों की जानकारी दी। इस दौरान राज्यपाल बागडे ने ''फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर'' पुस्तक का विमोचन किया। कार्यक्रम में श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि, पुलिस अधीक्षक तेजस्विनी गौतम, राजूवास के पूर्व कुलपति प्रो.एके गहलोत, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी सहित किसान, कृषि वैज्ञानिक और विद्यार्थी शामिल हुए।

स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी - राज्यपाल

» रासायनिक उर्वरकों से कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ रही

इबादत न्यूज

बीकानेर, 29 अगस्त। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाए जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण हो रही है। इनके अंधाधुंध उपयोग से कैंसर जैसे असाध्य रोगियों की संख्या भी बढ़ रही है। राज्यपाल बागडे गुरुवार को बीकानेर में कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी।

राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने के लिए हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश की गौ आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया।

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरुआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर 'बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष' कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्योग, साहित्य, कृषि, पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअन्न (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है।

केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। उन्होंने कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित हो रही है। मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वप्न है कि देश का किसान खुशहाल हो। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने स्वागत उद्बोधन दिया। पूर्व में राज्यपाल बागडे ने 'फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर' पुस्तक का विमोचन किया। बागडे ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर का लोकार्पण किया।

हार्ट अटैक से 27 साल के इंजीनियर की मौत

इबादत न्यूज

कोटा, 29 अगस्त। कोटा में 27 साल के इंजीनियर की हार्ट अटैक से मौत हो गई। वह खाना खाने के बाद वॉक कर रहे थे। इसी दौरान उनकी तबीयत बिगड़ गई। परिजन उन्हें लेकर हॉस्पिटल पहुंचे, जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया।

मामला शहर के महावीर नगर विस्तार योजना का बुधवार रात 10 बजे का है। वह आरएएस एग्जाम की तैयारी कर रहे थे। महावीर नगर थाना के हेड कॉन्स्टेबल अजित ने बताया- आनंद गौतम रात करीब 10 बजे वॉक करने निकले थे। इसी दौरान अपने चाचा राजेंद्र गौतम के घर में छत पर बने टॉयलेट में फ्रेश होने गए। वहां उन्हें घबराहट होने लगी। पसीना आने लगा। आनंद ने पिता महेंद्र गौतम को मोबाइल फोन से कॉल कर तबीयत खराब होने की जानकारी दी। परिवार के लोग राजेंद्र के घर पहुंचे और आनंद को प्राइवेट हॉस्पिटल लेकर गए। डॉक्टर ने साइलेंट अटैक से मौत होना बताया। परिवार के लोगों ने बताया कि आनंद को कोई बीमारी नहीं थी। कोटा से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद आनंद ने आरएएस एग्जाम की तैयारी शुरू की थी। उन्होंने जयपुर में रहकर एक कोचिंग सेंटर से आरएएस-प्री की तैयारी की थी। पांच महीने पहले वह कोटा लौट आए। यहां घर पर रहकर तैयारी कर रहे थे। चाचा राजेंद्र गौतम और आनंद के घर की दूरी 80 मीटर ही है। आनंद के तीन बहनें हैं, जिनकी शादी हो चुकी है। पिता बूंदी जिले के अरनेठा ग्राम पंचायत में दो बार सरपंच रह चुके हैं। दादा बाबूलाल गौतम बूंदी के पूर्व जिला प्रमुख रह चुके हैं।

Facebook- @Samachar.Hukmnama Instagram-Hukmnama.Samachar

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी

रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ रही है-राज्यपाल

बीकानेर (हुक्मनामा समाचार)। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाए जाने की जरूरी है। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति ण हो रही है। इनके अंधाधुंध उपयोग से कैंसर जैसे असाध्य रोगियों की संख्या भी बढ़ रही है। राज्यपाल बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी।

राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश की गो आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया।

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरुआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्योग, साहित्य, कृषि, पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में उल्लखेनीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअन्न (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है।

केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। उन्होंने कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित कर रहा है।

मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वप्न है कि देश का किसान खुशहाल हो। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने स्वागत उद्बोधन दिया।

पूर्व में राज्यपाल बागडे ने फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर पुस्तक का विमोचन किया। बागडे ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर का लोकार्पण किया और विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी: राज्यपाल

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी, राज्यपाल बोले-रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से कैंसर रोगियों की बढ़ रही संख्या

जयपुर. राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाए जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण हो रही है। इनके अंधाधुंध उपयोग से कैंसर जैसे असाध्य रोगियों की संख्या भी बढ़ रही है। राज्यपाल बागडे गुरुवार को बीकानेर में कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने

कहा कि जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी। राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने के लिए हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश की गौ आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया।

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए... **शेष पेज 9 पर**

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विवि में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित, राज्यपाल ने किया उद्घाटन

रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से कैंसर रोगी बढ़ रहे : बागडे

बीकानेर(सीमा सन्देश)।

राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा है कि स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाए जाने की जरूरत है। रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण हो रही है। इनके अंधाधुंध उपयोग से कैंसर जैसे असाध्य रोगियों की संख्या भी बढ़ रही है। बागड़े गुरुवार को यहां कृषि विवि के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित कर रहे थे। बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी।

राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने के लिए हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश के गो आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विवि द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने स्वागत उद्बोधन दिया। बागडे ने 'फसल अवशेष प्रबंधन हेतु

स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर' पुस्तक का विमोचन किया और विवि द्वारा विकसित स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर का लोकार्पण किया और प्रदर्शनी का अवलोकन किया। श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगासिंह विवि के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, जिला कलक्टर नम्रता वृष्णि, पुलिस अधीक्षक तेजस्विनी गौतम, राजूवास के पूर्व कुलपति प्रो. एके गहलोत, विवि कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी सहित किसान, कृषि वैज्ञानिक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

राजस्थानी वनस्पति पर अनुसंधान की जरूरत : केन्द्रीय मंत्री मेघवाल

केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरूआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर 'बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष' कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्योग, साहित्य, कृषि, पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअन्न (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है।

प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति : कृषि राज्यमंत्री चौधरी

केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। आज रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित हो रही है। मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वप्न है कि देश का किसान खुशहाल हो।

एसकेआरएयू : प्राकृतिक खेती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने किया शुभारंभ

स्वच्छ पर्यावरण और अच्छे स्वास्थ्य के लिए रासायनिक खाद मुक्त कृषि को बढ़ावा देने की आवश्यकता : हरिभाऊ बागड़े, राज्यपाल

✍ सीमान्त रक्षक न्यूज

बीकानेर, 29 अगस्त। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में गुरुवार को प्राकृतिक खेती पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ मुख्य अतिथि राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े, विशिष्ट अतिथि केंद्रीय कानून एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित विद्या मंडप सभागार में संगोष्ठी के शुभारंभ अवसर पर श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ मनोज दीक्षित, राजुवास के पूर्व कुलपति डॉ ए के गहलोत, जिला कलेक्टर श्रीमती नम्रता वृष्णि, एसपी श्रीमती तेजस्वनी गौतम, कृषि विश्वविद्यालय रजिस्ट्रार देवाराम सैनी, वित्त नियंत्रक राजेंद्र कुमार खत्री सहित विवि के सभी डीन, डायरेक्टर्स समेत अन्य कार्मिक, किसान, कृषक महिलाएँ और स्टूडेंट्स मौजूद रहे। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर द्वारा विकसित फसल अवशेष प्रबंधन मशीन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर का लोकार्पण भी किया। कार्यक्रम में अतिथियों ने पुस्तिका फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर का विमोचन किया। विदित है कि स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर द्वारा विकसित इस मशीन को भारत सरकार और यूके से पेटेंट भी मिल चुका है। यह मशीन उत्तर भारत में पराली जलाने की समस्या से निजात दिलाने में सहायक सिद्ध होगी। कम लागत की इस मशीन का कृषि विश्वविद्यालय जल्द ही बड़े स्तर पर व्यावसायिक उत्पादन भी शुरू करने जा रहा है। समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण और अच्छे स्वास्थ्य के लिए रासायनिक खाद मुक्त कृषि को बढ़ावा देने की सख्त आवश्यकता है। रासायनिक खाद के अंधाधुंध प्रयोग से जमीन के जीवाणु, असंख्य पक्षी विलुप्त हो चुके हैं और कैंसर रोगी बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसी तरह अगर फसलों में रासायनिक खाद का इस्तेमाल होता रहा तो एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 5 में से एक व्यक्ति को कैंसर होगा। यानि करीब 28 करोड़ लोग कैंसर से ग्रसित होंगे। ऐसे स्थिति में बड़ी संख्या में अस्पताल और डॉक्टर कहां से लाएंगे। उन्होने किसानों को खेती के साथ पशुपालन को बढ़ावा देकर समन्वित कृषि प्रणाली को अपनाने की बात कही। साथ ही बारिश के पानी को गांव की सीमा के अंदर ही रोकने और सहेजने की आवश्यकता बताई। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन को लेकर साधुवाद देते हुए कहा कि इस आयोजन से किसानों में जागरूकता आएगी। केन्द्रीय कानून एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान के साथ जय अनुसंधान का नारा दिया है। भारत सरकार खेती को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। मेघवाल ने अल्हा जिलाई बाई द्वारा गाए गीत खोखा म्हाने लागे चौखा, खेजड़लियां रा खजूर, फोगले रो करां म्हे रायतो, जिमां रोटी चूर गाकर प्राकृतिक खेती और श्रीअन्न को बढ़ावा देने और रोटी चूर के जीमने की बात कही। साथ ही बताया कि वर्ष 2025 में प्राकृतिक खेती करने वाले 100 किसानों को पुरस्कृत किया जाएगा। मेघवाल ने स्वामी केशवानंद जी के शिक्षा में योगदान को भी याद किया। केन्द्रीय कृषि व किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि भारत सरकार प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जा रही है। अगर किसी किसान के पास 5 एकड़ भूमि है और उसमें से एक एकड़ भूमि पर वह प्राकृतिक खेती करता है तो उसे 20 हजार रूपए का इनेशियटिव दिया जाएगा। उन्होने कहा कि देश जब आजाद हुआ तो देश में अन्न की कमी थी। हरित क्रांति लाई गई। कृषि वैज्ञानिकों ने बहुत अच्छा कार्य किया लेकिन अब खेतों में रासायनिक खाद के अंधाधुंध प्रयोग से भूमि बंजर हो रही है। जिस तरह एक नशा करने वाला बिना नशे के नहीं चलता, उसी प्रकार धरती को भी रासायनिक खाद का एडिक्ट बना दिया गया है। अगर मानव को बचाना है तो प्राकृतिक खेती की ओर जाना होगा। इससे पूर्व कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कार्यक्रम में स्वागत भाषण देते हुए कहा कि प्राकृतिक खेती एक ऐसा तरीका है जिसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है और पर्यावरण के अनुकूल टिकाऊ कृषि को प्रोत्साहन दिया जाता है। फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर मशीन के लोकार्पण को लेकर कहा कि यह कम लागत वाली मशीन उत्तर भारत में पराली जलाने की समस्या से निजात दिलाने में सहायक सिद्ध होगी। इससे मृदा में ऑर्गेनिक कार्बन की मात्रा बढ़ेगी और मिट्टी की जलधारण क्षमता में सुधार होगा। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पी.के. यादव ने धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय कुलगीत, विश्वविद्यालय प्रगति के सोपान का वीडियो प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ मंजू राठौड़ और डॉ सुशील ने किया।

प्राकृतिक खेती अपनानी होगी : बागड़े

राज्यपाल की दो दिवसीय बीकानेर यात्रा : रासायनिक कृषि को बताया स्वास्थ्य के लिए खतरा

बीकानेर, 29 अगस्त (प्रेम) : राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि प्राकृतिक खेती बगैर जमीन की उपजाऊ क्षमता प्रभावित हो रही है। रासायनिक खेती से बीमारियां बढ़ रही हैं। न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है।

मिट्टी के मित्र जीवाणु और सूक्ष्म जीवों की संख्या में नगण्य रह गई है। इन उर्वरकों के चलते आज कैंसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राज्यपाल बागड़े गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

50 साल पहले नहीं होता था : बागड़े ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। आज इतिहास की पुनरावृत्ति की जरूरत है। एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों।

जल संरक्षण जरूरी : उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान कर कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके। ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताकर कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक सोच से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी।

बीकानेर : कृषि विवि के विद्या मंडप में आयोजित कार्यक्रम में मंचस्थ राज्यपाल बागड़े, केंद्रीय मंत्री मेघवाल, भागीरथ चौधरी व अन्य अतिथि।

आज अन्न के भंडार भरे : राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था, जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। अब अन्नदाताओं ने मेहनत की तो 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी अन्न के भंडार भरे हैं।

किसानों का सम्मान बढ़ा : केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताकर कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरुआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर 'बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष' कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्योग, साहित्य, कृषि, पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने बताया कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। इससे पहले विवि के कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने अतिथियों का स्वागत किया।

दैनिक
जलतेदीप

प्रदेश * देश *

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ रही है : राज्यपाल

■ राज्यपाल ने कहा, स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी

■ जलतेदीप निस, बीकानेर

राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाए जाने की जरूरी है। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण हो रही है। इनके अंधाधुंध उपयोग से कैंसर जैसे असाध्य रोगियों की संख्या भी बढ़ रही है।

राज्यपाल बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी।

राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं।

उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश की गो आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया।

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है।

उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरुआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर 'बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष' कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाना जरूरी : राज्यपाल बागडे

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रारंभ

बीकानेर (ओम दैया)।
राज्यपाल श्री हरि भाऊ बागडे ने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। मिट्टी के मित्र किटाणु और सूक्ष्म जीवों की संख्या में नगण्य रह गई है। इन उर्वरकों के कारण आज केंसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राज्यपाल श्री बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। श्री बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि आज इतिहास की पुनरावृत्ति की जरूरत है और जरूरी है की एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी। राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश की गो आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया। केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। श्री मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरुआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

प्राकृतिक खेती पर संगोष्ठी के समापन समारोह में गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत होंगे मुख्य अतिथि

बीकानेर (नि.सं.)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर चल रही दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन शुक्रवार को होगा।संगोष्ठी संयोजक एवं कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पी.के.यादव ने बताया समापन समारोह के मुख्य अतिथि गुजरात के राज्यपाल माननीय श्री आचार्य देवव्रत और विशिष्ठ अतिथि पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री देवी सिंह भाटी और गुजरात प्राकृतिक खेती विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ सी.के.टिम्बड़िया होंगे। ये अतिथि दोपहर करीब 3 बजे संगोष्ठी के समापन समारोह में शिरकत करेंगे।समापन समारोह में स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर व गुजरात के प्राकृतिक खेती विज्ञान विश्वविद्यालय के मध्य एमओयू भी होगा। साथ ही पोस्टर प्रस्तुति में उत्कृष्ट प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र का वितरण किया जाएगा। कार्यक्रम सचिव डॉ वी.एस.आचार्य ने बताया ने बताया कि संगोष्ठी के दूसरे दिन समापन समारोह से पूर्व सुबह 10 बजे से दोपहर 12.30 तक और 12.30 से दोपहर 2 बजे तक दो तकनीकी सत्रों का आयोजन किया जाएगा। प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण विषय पर प्रथम तकनीकी सत्र का आयोजन महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ मनोज दीक्षित की अध्यक्षता और केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान के निदेशक डॉ जगदीश राणे की सह अध्यक्षता में विद्या मंडल सभागार में ही आयोजित किया जाएगा। जिसमें प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण , बीज प्रबंधन और कीट नियंत्रण के सरल उपाय, भूमि सुपोषण व गोबर,गोमूत्र प्रबंधन पर विषय विशेषज्ञ जानकारी देंगे। डॉ आचार्य ने बताया कि दोपहर 12.30 बजे से 2.00 बजे तक प्राकृतिक खेती परिणाम,कृषक अनुभव, कृषक संवाद विषय पर आयोजित होने वाले तकनीकी सत्र की अध्यक्षता राजुवास के पूर्व कुलपति डॉ ए.के.गहलोत और सह अध्यक्षता प्रधान वैज्ञानिक डॉ आर.के.सावल करेंगे।

दैनिक जलते दीप

प्राकृतिक खेती नहीं करने से जमीन की क्षमता कमजोर हुई : राज्यपाल

बीकानेर (ए.)

राज्यपाल हरी भाऊ बागडे ने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। मिट्टी के मित्र कीटाणु और सूक्ष्म जीवों की संख्या में नगण्य रह गई है। इन उर्वरकों के कारण आज कैंसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

राज्यपाल बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। आज इतिहास की पुनरावृत्ति की जरूरत है और जरूरी है की एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी।

राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं।

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरुआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर "बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष" कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्योग, साहित्य, कृषि, पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअन्न (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी वनस्पति फोगला, कैर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है।

केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने स्वागत किया।